की प्रधानता रहती है वहाँ तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

देवपुत्र = देव का पुत्र
राजकन्या = राजा की कन्या

रक / विभक्तियों के अनुसार यह 7 प्रकार का होता है -

A. कर्म तत्पुरुष समास - गृहागत = गृह को आगत
स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त

B. करण तत्पुरुष समास - मनचाहा = मन से चाहा
जन्मरोगी = जन्म से रोगी

C. सम्प्रदान तत्पुरुष समास - बलिवेदी = बलि के लिए दान
मार्गव्यय = मार्ग के लिए व्यय

D. अपादान तत्पुरुष समास - पथभ्रष्ट = पथ से भ्रष्ट
बंधनमुक्त = बंधन से मुक्त

E. संबंध तत्पुरुष समास - राजपुत्र = राजा का पुत्र
बैलगाड़ी = बैल की गाड़ी
कन्यादान = कन्या का दान

F. अधिकरण तत्पुरुष समास - सिरदर्द = सिर में दर्द
आपबीती = स्वयं पर बीती
कार्यकुशल = कार्य में कुशल
दानवीर = दान में वीर

3. कर्मधारय समास - जिस समास का पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है।

लालटोपी = लाल है टोपी
काला घोड़ा = काला है घोड़ा
महादेव = महान है जो देव
मृगलोचन, चन्द्रमुख, चरणकमल, नीलाम्बर, पीताम्ब

4. द्विगु समास - द्विगु समास में प्रथम पद संख्यात्मक तथा द्वितीय पद संज्ञा होता है। उदाहरणार्थ -

नवग्रह - नौ ग्रहों का समाहार
पंचवटी - पाँच वटों का समुदाय
दोपहर - दो पहरों का समाहार
चतुर्भुज, तिरंगा, चौराहा, आदि।

5. द्वन्द्व समास - जिस समास में दोनों ही पद प्रधान हों वहां द्वन्द्व समास होता है। जैसे -

माता-पिता = माता और पिता
भाई-बहन, रात-दिन, सुख-दुख, दही-बड़ा,
पाप-पुण्य, नाक-कान।

6. बहुव्रीहि समास - जिस समास में दोनों ही पद प्रधान न हों, कोई तीसरा पद प्रधान हो, वहां बहुव्रीहि समास होता है। जैसे -

दशानन = दश हैं सिर जिसके अर्थात् रावण
गजानन = गज के समान है सिर जिसका अर्थात् गणेश।
लम्बोदर, पीतांबर, चतुर्भुज,